[illegible] नाटक

प्र. ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार, कचौड़ीगली, वाराणसी

मूल्य ६ ५०

Collection: Bhojpuri pravasi shramikon ki sanskriti aur Bhikhari Thakur ka sahitya

यह नाटक कब लिखा गया?
इसकी जानकारी नहीं मिलती है।

जालिमसिंह नाटक

उर्फ

प्रेम का नया इशारा

॥ दोहा बन्दना ॥

ओ३म् अनादि अनन्त अज, अविनाशी अविकार ।
अगम सच्चिदानन्द प्रभु, बन्दौं बारम्बार ॥

॥ चौबोला ॥

बन्दौं बारम्बार अगोचर अलख निरंजन पावन ।
दीनबन्धु आनन्दकन्द रविचन्द विरंचि सुहावन ।
निराकार हो निर्विकार हो त्रिकालज्ञ मनभावन ॥
अद्भुत रचूँ चरित्र ललित रसना बसि देहु सिखावन ।
दोष-तुच्छ मतिमन्द निबुद्धी । करो प्रभु मेरा शुद्धी ॥

तिमिर अज्ञान विनाशक

कृपा कटाच्छ निहार दास यह मंडली करे उपासक ।

सखियों का गाना ।

चलो सखी चलो सखी पकवा इनरवा से, जलवा भरी लाईं नू साँवरगोरिया । घरिला में भरी भरी घरिला में भरी भरी अरर चढ़इबों घरिलवा कैसे उठी नू ए साँवर गोरिया ॥ सब सखी मिली जुलि, सब सखी मिली जुलि घरिला उठाई के, मूँगा के छोड़ि भागे के नू ए साँवरगो०

॥ समाजी चौपाई ॥

सखी कुँआ पर पहुंचो जाई, पानी भरे कमर लचकाई ।
जलभरि सखी भईं तैयारी, आपस में सब कीन्ह विचारी ॥

अपने अपने सिर पर भाई, गागरि मिलि सब लीन्ह उठाई।
मूँगा को दिया कसम धराई, गागरि कोइ न देहु उठाई॥
छोड़ वहाँ मूँगा को भाई, गागरि ले सब चली पराई।
रही वहाँ मूँगा पछिताई, कैसे गागरि सीर उठाई॥

दोहा–बहु बिधि से गागर वहाँ मूँगा रही उठाय।
गागर सिर उठती नहीं, कोटिन करत उपाय॥
वाहि समय पहुँचा वहाँ जालिमसिंह झट आय।
मूँगा की सूरत लखी, गिरा धरनि मुरझाय॥
जालिम की गति देखके, मूंगा किया उपाय।
बाह पकड़ कर होश में, दिया है झट उठाय॥
सनमुख मूंगा है खड़ी सूरत की अनमोल।
जालिमसिंह कहने लगा, ऐसे बचन को खोल॥

हो गइली हमहूँ बेहोश, जबसे सूरत देखली प्यारी तोर॥ टेक॥ केतनो सम्हारी हम सम्हरत नाहीं उठत दरद बड़ी जोर॥ जब०॥ प्रेम के बान मोरा तन में लगलबा तनि ताक तूँ हमरी ओर॥ जब०॥ तोहरा बिना हम जिअब नाहीं, राख तू अब मन मोर॥ जब०॥ ना कछुओ मोरा नीक लागत बा रामधारी करत निहोर॥ जब०॥

मूंगा का खेमटा

सुन रहिया ना कर बरजोरिया हो॥ सुन०॥ टेक॥
ई सब बात हमरा से जनी कहिह।
दोसरा से जोरल बा सनेहिया॥ सुन०॥
सिर पर उठाय दा हमरी गगरिया, इहे बाटे तोहसे अरजिया हो॥ सुन०॥

जालिमसिंह का भोजपुरी

केकरा के हऊ प्यारी धियवा पतोहिया से बोलिया बोलेलू जस कोइली दिलवा मोहनी॥ कवनाही जातिया में तोहरे जनमवां से कहां हउवे तोहरे मकान दिलवा

मोहनी ॥ तोहरी सुरत देखि जियरा लोभइले से मनवां रहेला अकुलाई दिलवा मोहनी ॥ नयना के बान मोर लागल करेजवा में सुधि बुधि गइल हेराई दिलवा मोहनी ॥

मूँगाका—कहवाँ के हव तुहूँ बाँके हो सिपहिया से ।
बोल काहें बोलिया कुबोलिया सिपहिया ॥
आपन चाहहु रामा तुहूँ जो भलइया से ।
चलि जाहु सीधा धइ डगरिया सिपहिया ॥
मोरा घर दुअरवा से कवन तोहरा कमवां से ।
कवन काम बाटे मोरा जाती से सिपहिया ॥

जालिमसिंह-बोलिया बोलत बाड़ू मधुर बचनियां से ।
सुनि मोर फाटत करेज दिलवा मोहनी ॥
नाहीं काम बाटे तोहरा घरवा दुअरवा से ।
पूछला से भइल कवन चूक दिलवा मोहनी ॥
दुनियाँ के बाटे रीति जाति गांव पूछे लोग ।
पूछला से काहें रिसीअइलू दिलवा मोहनी ॥

मूँगाका-बिन्दुपुर नगरिया में बाटे मोर मकनियां से ।
घनी बँसवरिया के बीच हो सिपहिया ॥
चारू ओर से बाटे रामा घनी बँसवरिया से ।
गइयां के दखिन की ओर हो सिपहिया ॥
उहवें त बाटे एक टुटही मड़इया से ।
ओही में करीला गुजरान हो सिपहिया ॥

दिनभर बेंचिले में सुपली मउनियाँ से ।
जतिया के हईं हम डोमिनियां सिपाहिया ॥
पानी भरे अईलीं हम सखियन के संगवा से ।
सखी गइलीं छोड़ि के पराई हो सिपाहिया ॥
भोरे के आइल रामा फूटली कीरिनियां से ।
माई भउजी जोहत होइहें बटिया सिपहिया ॥
हाथ जोरी कहतानी पइयां परत बानी ।
तनिक एक गरिला उठाई दा सिपहिया ॥
जालिमसिंह-हम हईं सुन गोरी राजाके सिपहिया से ।
रन में गहीके तलवार दिलवा जनियां ॥
हम तो उठाई देबि तोहरे गरिलवा से ।
हमरा के देबू का तूँ दान दिलवा जनियां ॥
मैनाका-हम तो हईं रामा घर के गरिबनी से ।
तोहरा के देबि का में दान हो सिपहिया ॥
नाहीं मोरा घरवा में पइसा कउड़िया से ।
नाहीं बाटे घर में अनाज हो सिपहिया ॥
जालिमसिंह-नाहीं हम नाहीं तोसे पइसा कउड़िया से ।
दानवाँ में देहु तूँ जोबन दिलवा जनियां ॥
नाहीं काम बाटे मोरा अन धन सोनवाँ से ।
सूरत तोहार दिल बसी दिलवा जनियाँ ॥

जालिमसिंह की प्रेम भरी बातें सुनकर मूंगाने प्रेम के फन्दे में फंसकर जालिमसिंह से जन्म भर निर्वाह करने की प्रतिज्ञा करायी।

समाजी दोहा

कसम खा जालिमसिंह ने, किया कौल करार।
मूंगा खुश हो उसी दम, हो गई तैयार॥
पर आजमाइश के लिये, रक्खा प्रेम छिपाय।
जालिम से कहने लगी, मधुर बचन समुझाय॥

मूंगा का पूर्वी भोजपूरी

गाँव का दखिन बाटे हमरी मड़ईया से।
चारू ओर घनी बँसवरिया सिपहिया॥
घरिला उठाई देहु लेके जाईं घरवा से।
कालहु अइह हमरी नगरिया सिपहिया॥
घरिला उठवला के दान देबि उहवां से।
चली अइह ठीक दुपहरिया सिपहिया॥

समाजी दोहा—

मूंगा का यह बचन सुन, जालिमसिंह हरषाय।
घरिला दिया उठाय के, मूंगा चली मुसुकाय॥
जल ले मूंगा घर गई, गागरि रखी उतार।
प्रेम सिपाही से लगा, काम रहा तन जार॥
तन की सुध बुध भूल गई, दिल रहा घबराय।
मूंगा की गति निरखि के, भउजी कहे सुनाय॥

भौजाई का पूर्वी भोजपूरी।

खिलल गुलाब अङ्ग काहे कुम्हिलाई गइले।
काई भइले देहियां के हलिया ननदिया॥
कवने कारण ननदी यह गत भइले से।
हमरा के देहु तूँ बताई हो ननदिया॥
पनियां भरन गइलु पक्कवा इनरवा से।
अइलु बेसाही के बलइया ननदिया॥

मूंगा का

पनिया भरन गइलीं पकवा इनरवा से। सखी हमें छोड़ि भागि अइली भउजिया॥ केहु न लउके चारू ओर हम तकली से। कइसे के घरिला उठाई हों भउजिया॥ गइलीं अकेले हारि घरिला उठावत से। घरिला ना उठे कोई भांति हो भउजिया॥ फेरवा में पड़ल रहे उहां मोर जानवां से। ताही लागी भइल बिलम्ब हो भउजिया॥ घरिला उठावेके उपइया करत रहलीं। ताही समय अइले एक सिपहिया भउजिया॥ आइ के पहुँचि गइले पकवा इनरवा से। देखी हमें गइले लोभाई हो भउजिया॥ हमारी सुरतिया पर भइले मोहितवा से। लागी गइलें प्रेमवा के फांस हो भउजिया॥ बीस ह बरिसवा के उमर सिपहिया के सूरती जे गढ़े सूरतहार हो भउजिया॥ देखिके सूरत मोर मनवां लोभइले से। लगले नयनवां के बान हो भउजिया॥ महादेवसिंह लागी कल ना परत मोरा। सूरत नजरिया पर नाचे हो भउजिया।

भौजाई का

कांचे कांचे बांसवा बा कांचे तोर उमरिया से। कांचे बाटे बुद्धिया तोहार हो ननदिया॥ राहे राहगिरवा से जोरलू सनेहिया से। नगर के कहिहें का लोग हो ननदिया॥ अबहीं उमिरि

थोरी कुछ ना सहूर तोरी । एही बयसे भयलू मतवाली हो ननदिया ॥ बिरहा के बगिया में कांचे खिलल कलिया से । बिना फूले भँवरा भोरवलू ननदिया ॥ बिरहा के मातल तूँ प्रेम विष घोरलू से । करि दिहलु गजबके बात हो ननदिया ॥ मनवां में देखो निजे करिके विचारवा से चूतर ठेठाई लोग हँसी हो ननदिया ॥ सीताराम सीताराम कहें महादेवसिंह सीताराम लगहहैं बेड़ापार हो ननदिया ।

समाजी का चौपाई

नीच ऊंचके बात देखाई । भउजी ने रक्खा समझाई ॥

समाजी का पूर्वी भोजपूरी

मूँगा के लेई संग चललीं भउजिया से । सुपली मउनियां बेचन मनवां मोहनी । जाइके पहुँचि गइलीं हाजीपुर बजरिया से । सड़की पर छनली दुकान मनवां मोहनी ॥ बीने और बेचे लगलीं छानी के दुकनियां से । मिली जुली ननदी भउजि मनवां मोहनी ॥ रचि रचि बीने डोमनी सुपली मउनियां से । बिनी कर करेली तैयार मनवाँ मोहनी ॥ ननदी भउजिया दुनों एक रंगे रूपवासे । चमकत चलेली बजार मनवां मोहनी ॥ बारी भोरी बाड़ी दुनों पतरी कमरिया के बेंचे घुमि सुपली मउनी मनवां मोहनी । हँसत खेलत दुनों बेंचेली बजरिया से । बिहँसि के मोहेली

परान मनवा मोहनी ॥ बड़ा मशहूर हउवे हाजीपुर बजरिया से बीचवा में घूमेलीं उतान मनवाँ मोहनी ॥ इहवाँ तो बेचे डोमिन सुपली मउनियाँ से । उहाँ सुनो जालिम के हाल ए सँवरिया ॥ मूँगा के तो प्रेमवाँ में भयले पागलवा से नाहीं परे जियरा में चैन ए सँवरिया ॥ ठीक दुपहरिया में गइले मूँगा घरवा से ॥ खोजी जालिम भइले हैरान ए सँवरिया ॥ चारू ओर खोजे जालिम धनी बँसवरिया से कतहूँ ना लागेला उदेश हो सँवरिया ॥ खोजत फिरत रामा जालिमसिंह सिपहिया से मूँगा मूँगा कहीके पुकारे ए सँवरिया ॥ मूँगा के बहिन मोती टुटही-मड़इया से कहें तब बचन सुनाई ए सँवरिया ॥ भउजी के संगे लेई सुपली मउनियाँ से बेचे गइली हाजीपुर हाट ए सँवरिया ॥ इतना सुनत रामा जालिमसिंह सिपहिया से चली भइले हाजीपुर हाट ए सँवरिया ॥

जालिमसिंह का यह गाना गाते हुए हाजीपुर जाना ।

कौवाली—तेरे दीदार बिन मूंगा न मुझको चैन पड़ता है ।
न चन्दा चाँदनी सुखरुह न खस खानहो भाता है ॥
करूं मैं क्या जतन प्यारी, बिरह मुझको सताता है ।
तुम्हारे इश्क में पड़कर न कुछ हमको सुहाता है ॥
पड़ी है जोर से गर्मी तपे तनको जलाता है ।
तेरे दीदार को मूंगा हमारा दिल तरसता है ॥
बदन कर दिया बेदम न दिल काबू में रहता है ।
तेरे दीदार के खातिर चश्म दरिया बहाता है ॥

समाजी का दोहा।

इसी तरह से विकल हो, जालिमसिंह सरदार।
पहुँचा झटपट जायके, हाजीपुर बाजार॥
मूंगा को वह देख के, दिल में हुआ आनन्द।
मधुर बचन कहने लगा, हरषि विहंसि मुखचंद॥

जालिमसिंह का।

एकवा इनरवा पर लागल तोसे नेहिया ए संवरिया।
घरिला के उठाई बाको बाटे मोर दान ए संवरिया।
अब इहाँ दे देहु तू चुकाई मोर दान ए संवरिया।
खोजत खोजत तुम्हे भइली हलकान ए संवरिया।
नाहीं तोसे भइले मुलाकात ए संवरिया।
अब प्यारी चलो मेरा संग ए संवरिया।
कसम खिलाई तूँ करबलू कबुलवा ए संवरिया।
घरिला उठवलू पट्टो मार ए संवरिया।

मूंगा का गाना।

तूही जे हव जालिम जाति के छत्रिया।
हम हईं जाति के डोमिनियाँ हो जरा सुनिल॥
हमके ले जइब तोहार जाति चलि जइहें।
हो जइब डोमवाँ के जतिया हो जरा सुनिल॥
का तू लोभाइल जालिम देखि के सुरतिया।
इत हउवे माटी के मुरतिया हो जरा सुनिल॥
माया के बगिया में का तू लोभाइल।
सुगवा के हो जइहैं हलिया हो जरा सुनिल॥
बारह बरिस सुग्गा सेवले सेमरवा।
मारत चोंच छड़े मुअवा हो जरा सुनिल॥

वार्ता--ऐहो। सुन ये लोग? ई छत्री हम डोमिन। भला ई कहीं शोभो जे सुनी से का कही।

जालिम-सुनीसे अपना घरे रही कहिहे केहू करी का अब चल्हाकी रहेद।

गाना—घरिला उठवनी इनाम मोर बाकी बाटे।
देले दाढ़ू हमके बचनियाँ हो बरा मानिल॥
चली चलहु प्यारी हमरी नगरिया।
खोजत अइली हाजीपुर बजरिया हो जरा मानिल॥

भउजी का दोहा—

जरा हटके तूं जरा हटके बातें बनाया करो हो जरा हटिके। कहवाँ के हवतू तो ठग बटमारवा फोरतार हमरी ननदया हो जरा हटिके। हमनी का ना हई रंडी पतुरिया तूं अइले ठगे दगाबाज जरा हटिके। फिर कुछ बोलब तो ठीक नाहीं परिहें. छिनलेबि पछारी के घोड़वा हो जरा हटिके। आपन जो चाहो यदितूं इज्जत पनियाँ चलि जाहु सीधा घइ रहतिया हो जरा हटिके।

जालिमसिंह का।

चल चुप रहु क्यों बातें बनाने लगी रे चल चुप रहु। तूँ लुची है बदकार तुमको शरम नहीं जिनहार॥ चल०॥ क्या थोती बबाती चबाती है गाल तेरा इसमें गलेगा जरा नहीं दाल॥ चल०॥

जालिमसिंह के साथ में, सुनकर ऐसी बात।
मूंगा यूं कहने लगी, घर भउजी के हाथ॥

मूंगा का पूर्वी भोजपुरी

सुन सुन भउजी हो हमरी बचनियाँ से। जनी करो झगड़ा लड़ाई तूँ भउजिया॥ बलु जान जाई भउजी हारबि ना बचनियाँ से। जाइब हम जालिमके संगवाँ भउजिया॥ करम के लिखल कोई नाहीं मेटन हारवा से। लिखल बतिया होला भुगतनवां भउजिया॥

समाजी दोहा—मूंगा जब ऐसे कही, सुन जालिमसिंह सरदार।
दिल ही दिल खुश होयके, हाथ धरा दिलदार॥

पूर्वी भोजपूरी—

गोदिया उठाइ जालिम घोड़वा चढ़वले से। लेई चलले अपना नगरिया सिपहिया॥ एड़वा लगाई मरले घोड़वा के कोड़वा से उहवाँ से घोड़वा उड़वले सिपहिया। एक कोस गइले जालिम गइले दुइ कोसवा से। पहुँचे जाई अपनी नगरिया सिपहिया। घरी रात गइले वो पिछली पहरिया से। सुत गइले नगर के लोगवा सिपहिया॥ ओहीरे समइया में जालिमसिंह सिपहिया से। पहुँची गइले अपनी महलिया सिपहिया॥ दुअरा पर ठाढ़ होई जालिमसिंह सिपहिया से। माई माई करेलें पुकार हो सिपहिया।

जालिमसिंह का गाना।

खोलु खोलु आहो माता बजर केवड़िया ए मैया हो मोरी दुअरा पतोहिया परिछो आई ए मैया हो मोरी॥ कहतारे रामधारी सुनो अरजिया ए मैया हो मोरी गंजपार गोसाईं बा मकान ए मैया हो मोरी॥

वार्ता—माता का आकर केवाड़ी खोलना और मूंगा को देखकर जालिम से पूछना।

माता का।

हई के ह ए बबुआ!

जालिमसिंह का।

ई तोर सेवा टहल करे खातिर एगो औरी लिअवले अइलीं हाँ।

माता का।

अच्छा ए बबुआ अच्छा इहेनु होशियार बेटाके चाही जे जहाँ जा तहाँ से एगो हाथ लगवले आवे।

माता खुश होकर बेटा पतोह को महल में ले जाकर नाउन से गोतिन देयादिन को बुलाकर विवाह के गीत गाना।

विवाह सगुन का गीत।

संस्कार गीत

पुरइन पात पर सुतेली गउरा देई सपना देखली अजगूत हे॥ टोलवा परोसवा के तूहूँ मोर गोतिन सपना के कर ना विचार हे॥ पच्छिम देस बाजन एक बाजेला, शिवजी के होखेला विवाह हे॥ बसहा बैल शिव पालकी बनवले, भूत बैताल बरियात हे। दुई सहस्र नाग पीठ पर लोटेले, देखी सखी गइली डेराय हे॥ परिछन चलली सासू हो सोहागिन नाग छोड़ेला फुफुकार हे। थरिया पटकी सासु घर में समइली गउरा लेई पिटेली कपार हे। ऐसन बउराह बरसे बेटी ना बिआहब, बलु गउरा रहिहे कुँवार हे। मछिया के भेषे गउरा काने लागी कहेली, सुनीं शिव अरज हमार हे॥ तनि एक रूप रउरा बदलीं महादेव, नैहर के लोग पतिआइ हे।

झूमर।

देवर अपना भइया के बोलाद हो. मोरी चढ़ल बा जवनियाँ॥ टेक॥
कलिया मैं चुनि-चुनि सेजिया लगवलीं ताहू बीतल सारी रतिया॥देवर०॥
साटन के चोली ढाके के चीर मारेला जोबन लहरिया॥ देवर०॥ चढ़ल
जवानी दिवानी फिरत बानी उ नाहीं आवेला सेजरिया॥ देवर०॥ फिर
रामधारी लागी कारन धीरज धारी सरकत फुफुती कमरिया॥ देवर०॥

घर नारी गावै मंगल, उधर होत व्यवहार।

(मूंगा और जालिमसिंह का विवाह होना)

विवाह मंत्र

ॐ विष्णु मंगलम्, चतुर्भुजम् निलवरम् गरुड़ वाहनम्, गदाधरम् कमलापते नमो नमः। ज्येष्ठामासे शुक्लपक्षे अष्टमी, तिथिषु, विवाहकरन्ते सेन्दूरमदानम समर्पयामी समर्पयामी।

औरतों का विवाह के गीत गाना।

सेन्दुर दरू, सेन्दुर दरू, माईके बहिनियों के औरे पितिआइनके सेन्दुर दरही ना जानेरे छिनारी के बेटा। माईतोरी गोरी बहिनी छिनारी, गाँवके गोंड़इत बाप तोहरा, गारी देवहीना जाने रे छिनारी के बेटा।

समाजी का—

रेड़ के मुसरवा रामा सरई के सूप हो प्यारे।

कारले पतोहिया परिछन जी।

दस सखी आगे रामा दस सखी पीछे हो प्यारे।

मिली जुली मंगल गावहु जी॥

॥ औरतों का गीत गाते हुए परिछन करना॥

हंसत खेलत मोर बाबू गइले, मन बेदिल काहें अइले चित बेदिल काहें अइले। सास छिनरियो जे योग कइलीं मन बेदिल एहि अइले चित्त बेदिल एहि अइले समाजीका- टोलवा परोसवा के अइली परोसिन से।

मूँगा कर देखे लगली मुँहवा सँवरिया॥

केहूँ तो देला मुंह देखि के रुपयवा से।

केहू मुंह देखि देला गहना संवरिया ॥

एक औरत का जालिम सिंह के माता से –

एहो बहिनी ई सोनपुर वाली पतोहिया ह। ना ए बहिनी सोनपुरवाली के तो अभी गवने ना आइल। इतो दोसर एगो परदेश से ले अइले गोहा। औरत—अच्छा ए बहिनी अच्छा, इहो बड़ा सुन्दर बिआ, भगवान कायम राखसु।

जालिमसिंह के माता का

रउरा सबनी के आशीर्वाद चाही।

(विवाह और चौठारी हो जाने के बाद जालिमसिंह का मंगा से)

एहो प्राणप्यारी अब तू ही रसोई बनावल कर माई का बड़ा दुःख होता।

मूंगा का-बहुत अच्छा।

(मूंगा का रसोई बनाना और गोइठे का आग नहीं लहकने पर सासु से इस तौर कहना)

गाना भोजपुरी।

हमरा नैहर जरे बाँसके छोलनियाँ से तोहरा इहाँ जरेला चिपरिया हो मैया ॥ गोइठा के धुआँ सासु लागे मोरा अँखिया से। लोरवा पोछत भींजे आंचर हो मैया ॥ गोइंठा के धुआँ नाहीं हमसे सहात बाटे। हमरा से होई ना रसोइयाँ हो मैया ॥ हमरा नैहर सासु भेजी के अदिमिया से। बाँस के छोलनियां मँगाद मेरी हो मैया। बांस के छोलनियाँ

आइ करबि रसोइयाँ से। गोइठा से जीव घबड़ात मोरी हो मैया ॥ कहे रामधारीराम गंज पार हमारे आम। सासु से अरजी करी कहे मूँगा हो मैया ॥

सासु का मूंगा से—

कहाँ तोर घर बबुआ कौन तोर जतिया से। कहवाँ से जालिम ले अइले बहुरिया ॥ तोहरा नैहरवा में कौन रोजगरवा से। साँच समझाई कह हमसे बहुरिया। साँच-साँच हाल बबुआ हमसे आपन कहु। मोरा मन होत बा सन्देह ये बहुरिया ॥

मूंगाका-विन्दुपुर नगरिया में मोर नैहरवा से। जातिया के हईं डोमिनियाँ हो मैया ॥ सुपली मउनियाँ के होला रोजगारवा से। बाँस चीरि फारिके बीनाला मोरी हो मैया। धरिला उठावत लागल हमसे नजरिया से। परी गयली प्रेमवाँ के फाँसवा हो मैया। बहियाँ पकड़ी हमें घोड़ा पर चढ़ाई कर। ले अइले अपना नगरिया हो मैया ॥

समाजी—मूंगा की ऐसी बातें सुन जालिमसिंह क. माता अफसोस करके रोती कलपती हुई जालिमसिंह से कहने लगी।

धिक धिक हवे जालिम तोहरी जिन्दगिया से। कुलवा में दगिया लगवल दुखरुआ ॥ नव ये महीना जालिम रखली गरभवा में। जनम के बेरी दुःख सहलीं दुखरुआ ॥ तोहरे जनम लागी सूर्य मनवलीं से। बरत

कइली एतवारवा दुलरुआ ।। जानती जे होइब जालिम तू आज डोमवा तो सउरो में नुनवाँ चटइती दुलरुआ ।। देशवा मुलुकवा मे नमवाँ हँसवल से सात पुस्त नरक डुबवल दुलरुआ ।। हमरे बुढ़ापा कर माटी बरबाद कइल । बोरल तूं माँहे बाटे डांगवा दुलरुआ ।।

जालिमसिंह-विधिके लिखल नाहीं कोई मेटन हारवाले।
लिखल बतिया होला भुगतान मोरी हो मैया ।।
कुँवारी तो कनियवाँ में कछुना विचरवा से ।
ब्याह भइले होली अर्धाङ्गी मोरी हो मैया ।।
पहिले के चत्री लोग पाइके कुँवारी कन्या ।
लाइके करत रहले ब्याह मोरी हो मैया ।।
जाति पाँति कर नाहीं रहे कुछ विचरवा से ।
लिखल इतिहास में बा देखो मोरी हो मैया ।।
मूँगा त भरत रहलीं पकवा इनरवा से ।
लागी गइले प्रेमवाँ के बान मोरी हो मैया ।।
प्रेमवाँ के बान मोरा बेधले शरीरिया से ।
सूरती पर गइलीं लोभाई मोरी हो मैया ।।
मूँगा के प्रेमवाँ में बसि गइलें मनवाँ से ।
प्रीतिया के डोर में बन्धइली मोरी हो मैया ।।

माता का—

गुड़ मुतवा में सुति सहली विपतिया से । तोहरा के कइली यतनवां दुलरुआ ।। पालि पोसि

कर तुम्हें कहली सेअनवां से तूँ कहला मोसे धोखा बजिया दुलरुआ ॥ यदि तुहुँ चाहा जालिम अपनी भलइया से मानी लेहु हमरी बचनियाँ दुलरुआ। कहत में बानी जालिम छोड़िदो डोमिनियां से। यही में बा सबही भलइया दुलरुआ ॥ चाचा तोहार सुनिहें जब यह तो हवलिया से। घरवा से दोहें निकालो हो दुलरुआ ॥

जालिम का बहरेतबील।

मेरा मानो कहन माता तुमसे कहूँ, नाहीं छोड़ूँगा संग डोमिनियां के। मूँगा मनमें बसी मेरे दिल में धँसी प्रेम लगा है मेरा डोमिनियां के। यह दुनियां में कोई न आता नजर, मेरा नेह लगा है डोमिनियां के। नाहीं छोड़ूंगा मैं महादेव की कसम माला जपूँगा नाम डोमिनियां के।

(जालिमसिंह की ऐसी बात सुन माता अपने देवर जगरनाथसिंह से जा कहने लगी)

गाना-बड़ा तो जुलुम बाबू जालिम कई दिहले हे। ब्याह कइले लाई के डोमिनियां देवरऊ ॥ धरम करम सब कुल खानदानवां में। दिहले लगाई कर दगिया देवरऊ ॥

इस तौर की बात सुन जगरनाथ सिंह झट जालिमसिंह को बुलाकर कहने लगे।

दोहा—सीधा सादा है बना, असल पौनियां नाग।
लगा दिया बज्जात तैं, सात पुस्त में दाग ॥

बेटा तुमको था नहीं, करना ऐसा काम।
शेर का बच्चा होकर डुब दिया तैं नाम॥

जालिमसिंह का

आँखें मेरी दोषी हैं कुछ दोष न इसमें मेरा है।
चाचा क्या समझाते हो यह कहना गलत तुम्हारा है॥

चाचा—मानले मानले समझाने हैं हम,
कर कहन को मेरे बन उजर ही नहीं।
वरना तेगे दुदमसे खतम कर तुझे,
भेजूँ मुल्के अदम बस कसर ही नहीं॥

जालिमसिंह का-काटलो काटलो सर झुकाये हैं हम।
मुझे मरने का रञ्जो अलम ही नहीं॥
ऐसी धमकी दे किसको डराते हो चाचा।
मुझे मुल्के अदम का तो डर ही नहीं॥

और देखिये—चामे न चे चामे गाये चामे ताल लगावे
जब चमड़ा से चमड़ा घिसे तब चमड़ा सुख पावे॥
यह दुनियाँ की रीति रीति है रोज सिनेमा जावे।
रोशनी की जब कमी पड़ी तब चूहा दाव लगावे॥

जब चाचा के समझाने पर जालिमसिंह नहीं माना तब चाचा ने जल्लादों को बुलाकर कहा—

अरे कोई है?

जल्लाद का—जी हुजूर हाजिर हूँ।

चाचा—जालिम को जेल से आकर कैद करो।

जल्लाद का—अच्छा हुजूर आये।

जल्लादों ने जालिमसिंह को जाकर कैद कर लिया। चाचा जगरनाथ जालिमसिंह का जेल दिलाकर मूंगा का घर से निकाल कर बाहर किये।

जब मूँगाको घर से निकाल देने की खबर जालिमसिंह को सुनने में आई तब उसने जेलका पाँचिले फानकर मूँगासे जा मिला, और अपनी दुख की कहानी एक दूसरे से कही, फिर भटनी में जाकर रहने लगा। इधर जालिम सिंह की जेल से निकल भागने की खबर जब उसके चाचा जगरनाथसिंह को मालूम हुई, तब वह दिल ही दिल दुःखी हो अफसोस करने लगे, और माता रोने कलपने लगी। फिर चाचा जगरनाथसिंह ने जालिमसिंह की पहली ससुराल खानपुरको सारा हाल लिखकर भेज दिया। पत्रको पढ़कर जालिमसिंह की सास अपनी बेटी सोना को छाती से लगा रो-रो कर कहने लगी।

चिठिया बाँचत मोर छतिया बिहरि जात। सालत करेजवा में शूल ए बबुनियाँ॥ रहली गरभवा में नव तो महिनवां से। गोदी पाली कइली सेयान ए बबुनियाँ॥ मारधा से कइली बेटी तोहरे बिवाहवा से। आजु भइले सबही अ धारथ बबुनियाँ॥ करम में लागल बेटा आजु तोहरे अगिया से। कहीं हम कवन कुशलिया बबुनियाँ॥ तोहरे ससुरवा से आइल एक पतिया से। लिखल बाटे हालया कुहलिया बबुनियाँ॥ तोहरे तो स्वामी कइले डामिनी से शादिया से लेके गइले होइकर डोमवाँ बबुनियाँ॥

जब जालिमसिंह की ब्याही स्त्री ने माता से पति की बातें सुनी तब ईश्वर से विनय करने लगी।

गाना-भइले विवाह नाहीं गवना करले। ए गोसइयाँ मोरे। लगले करमवाँ में आग ए गोसइयाँ मोरे॥ हमर अभागिन के जरले करमवाँ ए गोसइयाँ मोरे॥

कइसे बेड़ा होई अब पार ए गोसइयाँ मोरे।
पुरुष जनमवाँ में कवन भइले चुकवा ए गोसइयाँ मोरे॥
सेयाँ जाही लागी भइले डाम ए गोसइयाँ मोरे।
महादेवसिंह से ना चुकली कौनों बतिया ए गोसइयाँमोरे।
काहे डाँका परल बीचे आइ ए गोसइयाँ मोरे॥

जालिमसिंह की ब्याही स्त्री ने इस तरह से पति के बिरह में व्याकुल हो घर से निकल स्वामी के उद्देश्य से विलाप करती हुई जंगल झाड़ी के रास्ते से चली।

ब्याही का गाना-अगिया जे लागल हो हमरे करमवाँ में। डोमिनी के संग डोम भइले बलमुआं॥ कवना जनमवाँ के रहल यह चुकवा से। हमरा के दुख देइ गइले बलमुआं। भइले विवाह नाहीं कइले गवनवाँ से। सुख दुख कुछ नाहीं जनली बलमुआं॥ बिरहा के आगि मोरे लहरे करेजवा में नाहीं दुख बुझले बेदरदी बलमुआ॥ दिनवाँ बितत मोरा चलत डगरिया से। रतिया बितत कुहुकत ए बलमुआ॥ चढ़ली जवानी मोरी माटी में मिलवले से। कठिन करेज होइ गइले बलमुआ॥ हाय भगवान मोर असिया पुजल नाहीं। कइले सहवि दुख भार हो बलमुआं॥

इस ओर से ब्याही स्त्री रोती कलपती अपने पति जालिमसिंह को खोजती हुई जा रही थी कि बीच रास्ते में एक डाकू ने उसे आ घेरा और डपट कर बोला।

डाकू तू कौन है ठहर, तेरे पास क्या है

सब माल खोलकर यहाँ रख दे।

ब्याही का-मैं एक अबला स्त्री हूँ दुखकी मारी फिरती हूँ

ब्याही का गाना-अब भगवान सरन मैं तेरी, हाथ जोड़ के खड़ी है चेरी। अब० ॥ कोई खता हमसे होखल होखे ऊ सब माफ करीना मेरी ॥ अब० ॥ हम अबला बिपत के मारल हईं, कृपा करो काहे लगावेल देरी ॥ अब० ॥ "राम ये धारा" ग्वाल कहें गंज क अबकी लाज प्रभु राख लो मेरी ॥ अब० ॥

डाकू का -प्यारी सुनिल बात हमार। इधर-उधर के छोड़ो ख्याल ॥ मत फैलाओ हमसे जाल। यहाँ न गली राम के दाल ॥ हम बनाइब तोहरे हाल। न तो दे दो सब तू माल ॥ जलमल डाकू नाम हमार। हमके जानत है संसार ॥ ना तो देख इहे कटार ॥ अबले खैर की तूँ हो नार ॥

ब्याही का दोहा--वो मूरख तुझसे कहूँ, सुन ले मेरी बात।
ऐसे अबल नार के, ऊपर न डारो हाथ ॥
जिस हाथ से चाहे तू पकड़ न मेरा गात।
तेरे ऊपर गजब का आवेगा आघात ॥

ब्याही की बातें सुन डाकू झट पकड़ने के लिए दौड़ा। वह बेचारी निराश हो ईश्वर को पुकारने लगी।

ब्याही का गाना--अब पति राख जगत में रामा ॥ टेक ॥ मझधार में नाव परल बा तुही तो खेवन हार ॥ अब० ॥ सती के तुही धर्म बचाव, यह निर्दई से बचे न प्रान ॥ अब० ॥ हम तो अभागिन बिपति की

भागी तब हूँ न बचेला जान ॥ अब० राम गे धारी ग्वाल कहें गंज के, रउरे पर बा हमार ध्यान ॥ अब० ।

संकट में पड़कर जालिमसिंह की ब्याहा स्त्री इस प्रकार से प्रार्थना कर ईश्वर को पुकारने लगी, डाकू ने जबरदस्ती उसको पकड़ना चाहा ! ऐसी दुष्टता को देख सती का सत्य बचाने के लिए विष्णु भगवान् ने साधु के भेष में प्रकट हो उस दुष्ट डाकू को मार डाला और सती की रक्षा की। डाकू के मर जाने पर साधु के वेष में भगवान सती से कहने लगे।

भगवान का--ऐ सती ऐसे भयानक बन में अकेली तूँ किस लिये आकर फिरती हो।

सतीका--महाराज ! मैं अपना दुःख आपसे क्या कहूँ मेरे पति मुझे छोड़कर एक डोमिन के साथ शादी कर उसी का ले घर से चले गये हैं। उन्हीं को मैं ढूँढ़ती फिरती हूँ।

भगवन् का-ऐ सती देखो दुनियाँ में कोई किसी का न है न होगा। तू झूठ मूठ ऐसी बलाय अपने सर पर उठाके उस बेइमान को ढूँढ़ती फिरती है। वह तुम्हारा होने वाला नहीं है. अगर होता तो तुम्हें छोड़कर डोमिनके साथ नहीं चला जाता। तुम हमारी बात मानों, घर लौट जाओ।

सतीका--महाराज। आप कहते हैं किस भरोसे पर घर लौट जाऊँ। जिसके साथ इस संसार में मेरा सोहाग का स्नेह जोड़ा गया था उसके बगैर मेरा निर्वाह और मुक्ति होने का कोई यत्न नहीं दीख पड़ता है। मैं घर लौटकर क्या करूँगी। वह हमारा भले ही न होगा पर मैं उसको ढूंढ़कर एक बार चरण का दर्शन कर लूंगी तो मेरा जन्म सार्थक और सफल हो जायगा।

सती की सत्यता के ऊपर भगवान् चकित होकर बोले।

भगवान् का-ऐ सती तेरा सोहाग संसार में अटल

रहेगा और तेरी मनोकामना पूरी होगी।

सती से यह कह भगवान् अन्तर्ध्यान हो गये और सती अपने पति की खोज में वहाँ से आगे बढ़ी तो दैवयोग से उस स्थान पर जा पहुँची जहाँ पर कि उसका पति मूंगा को लेकर रहता था। ब्याही स्त्री को राह में अकेली देख मूंगा ने उससे पूछा।

मूंगा का--बहन तूँ कहाँ की रहनेवाली हो और अकेली कहाँ जा रही हो? तुम्हारे साथ और भी कोई है? ब्याही का-साथ का रहनेवाला तो बेहाथ हो गया और मैं कहाँ जाती हूँ तुमसे कहाँ बताऊँ। मेरा नगर सोनपुर और ससुराल रामडिहरा में है। मेरे पति मुझे छोड़कर एक डोमिन के साथ शादी कर उसे लेकर घर से चले गये हैं उन्हीं को ढूँढ़ती हूँ।

ब्याही की ये बातें सुन बात सत्यवादी मूंगा समझ गई कि मेरे पति की पहली स्त्री यही है।

मूंगा का-ऐ बहन मैं तुम्हारे पति को जानती हूँ। हमारे साथ चलो तुम्हारे पति से तुम्हें मिलाय देती हूँ। ब्याही-ऐ बहन यदि तूँ हमारे पति से हमें मिलाय दोगी तो तुम्हारे चरण चूम जन्म भर गुण गाऊँगी।

ब्याही को लेकर मूंगा पतिके पास गई और वहाँ जाकर ब्याहीसे कहने लगी

मूंगा का-लो बहन यही तुम्हारे पति हैं, अब तुमहीं इनको साथ में लेकर भोग विलास करो मैं इनसे बाज आई। जो आज्ञा करो उसी मुताबिक चेरी होकर रहूँगी।

ब्याही का-नहीं बहन यह क्या कह रही हो मैं तो पहले तुमसे कह चुकी

हूँ कि मेरे पति से मुझे मिला दोगी तो तुम्हारा चरण चूम जन्म भर गुण गाऊंगी। इसलिए मैं तुम्हारी आज्ञाके अधीन रहूँगी जो मुझे आज्ञा करोगी मैं तुम्हारी चेरी होकर बजाऊंगी।

दोनों स्त्रियों का साथ और परस्पर का प्रेम देखकर भगवान् स्वर्ग से विमान लेकर आये और कहने लगे।

ऐसी सती! तुम दोनों के सत्य से सारा भूमण्डल डगमगा गया है। अब तुम दोनों अपने पति के सहित विमान पर बैठ बैकुण्ठ को चलो।

सतियों का प्रमाण

यह बात संसार में प्रसिद्ध है कि पतिव्रता स्त्री के कारण पति का उद्धार और मुक्ति हो जाती है। यह बड़े-बड़े शास्त्रों का कथन है।

सावित्री ने अपने सत्य ही के बल से मरे पति को जिन्दा कर लिया था। इसी तरह यह तीनों अपने धर्म वचन पर अटल थे, इसलिये बैकुण्ठ को प्राप्त हुए। इस पर शंका करना व्यर्थ है। सबूत के लिये अनेक प्रमाण मौजूद हैं। जालिमसिंह प्राचीन क्षत्रियों में नहीं थे, नवीन क्षत्रियों में थे।

पति और दोनों स्त्री अर्थात् तीनों विमान पर बैठ बैकुण्ठ को चले गये।

॥ इति ॥

हर प्रकार की पुस्तक मिलने का पता—

ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार

कचौड़ीगली, वाराणसी-१

मुद्रक-शीतला प्रेस, सेनपुरा, वाराणसी।

हमारे यहाँ की प्रकाशित पुस्तकें—

एक बार मँगा कर अवश्य पढ़िये

सुखसागर भाषा ग्लेज	५०.००
यज्ञ-मन्त्र संग्रह	५०.००
विधान प्रकाश	४०.००
रसराज महोदधि पाँचो-भाग सम्पूर्ण	४०.००
बगलोपासन पद्धति	१०.००
ग्रहशान्ति-पद्धति भाषा-टीका	२५.००
मानसागरी भाषा टीका	३०.००
भावकुतूहल भा० टी०	१५.००
बृहज्ज्योतिषसार भा. टी.	१५.००
मुहूर्त्त चिन्तामणि भा. टी.	१५.००
गौरीशंकर गुटका	१०.००
लग्न चन्द्रिका भा. टी.	१०.००
सङ्कष्टगणेश चतुर्थी भा. टी.	१०.००
दुर्गा-पूजन पद्धति	८.००
बृहद्पाराशरहोरा शास्त्र भाषा टीका	५.००
गणपति प्रतिष्ठा पद्धति	६.००
स्त्री जातक भाषा टीका	६.००
लग्न चन्द्रिका भा. टी.	१०.००
गौरीशङ्कर गुटका	१०.००
वाल्मीकीय रामायण सुन्दर-काण्ड मूल गुटका	१०.००
मुहूर्त्त चिन्तामणि भा.टी.	१५.००
मानसागरी भाषा-टीका	२५.००
शिवपुराण भाषा बड़ा संपूर्ण ग्लेज	६०.००

कुम्भ विवाह प्रयोग	१.५०
रामायण मध्यम मूल दोहा चौपाई आठों काण्ड	३०.००
शिवपुराण भाषा बड़ा	६०.००
विष्णु याग पद्धति भा.टी.	५०.००
वाल्मीकीय रामायण सुन्दर काण्ड मूल गुटका	१०.००
दुर्गा सप्तशती भा.टी.	८.००
विन्ध्यवासिनी पुष्पांजलि	२.००
दुर्गापाठ ३२ पेजी गुटका	५.००
भर्तृहरिशतक भा. टी.	४.००
दुर्गासप्तशती केवल भाषा	४.००
रुद्राष्टाध्यायी मूल	४.००
चाणक्यनीतिदर्पण भा. टी.	४.००
दुर्गापाठ ६४ पेजी गुटका	३.५०
श्रीसूक्त पुरुषसूक्त भा. टी.	२.५०
धनिष्ठा पञ्चक शांति	३.००
विश्वकर्मा प्रकाश	२०.००
गायत्री रहस्य	२०.००
हनुमान बाहुक	०.८०
विष्णु याग पद्धति भा. टी.	४०.००
बृहज्ज्योतिषसार भा. टी.	१५.००
भावकुतूहल भाषा टीका	१५.००
ग्रहशान्ति पद्धति भाषा टीका	२५.००
बगलोपासन-पद्धति	१०.००

हर प्रकार की पुस्तक मिलने का पता—

ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार

कचौड़ीगली वाराणसी—१

मुद्रक—भारत प्रेस, कचौड़ीगली, वाराणसी-१